B.A I Hon's
I Paper

अर्धमागधी ~~[struck]~~ अंग आगम साहित्य का सामान्य परिचय प्रस्तुत करें।

प्राकृत आगम साहित्य में अर्धमागधी आगम साहित्य का विशेष महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है क्योंकि चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का मूलउपदेश अर्धमागधी प्राकृत भाषा में ही हुआ था। इसी कारण अर्धमागधी को ऋषि भाषा भी कहा जाता है वैदिक भाषा के समान इसे भी प्राचीन भाषा माना जाता है। अर्धमागधी का रूप गठन मागधी और शौरसेनी से हुआ है।

आचार्यों ने आगम शब्द की विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं आचार्य मलयगिरि का अभिमत है कि जिससे पदार्थों का परिपूर्णता के साथ मर्यादित ज्ञान हो वह आगम है अन्य आचार्यों का मत है कि जिससे पदार्थों का यथार्थ ज्ञान हो वह आगम है। जैन दृष्टि से जिन्होंने राग-द्वेष को जीत लिया वे जिन तीर्थंकर और सर्वज्ञ है उनका तत्त्व चिंतन, उपदेश और उनकी विमल वाणी आगम है।

अर्धमागधी के आगम के बारह अंग, बारह उपांग, छः छेदसूत्र चार मूलसूत्र दस प्रकीर्णक है।

अंगग्रंथ → (1) **आचारांग** → अंग आगम साहित्य में आचारांग का सर्वोच्च स्थान है इसमें मुनियों के आचार-व्यवहार के नियम बतलाये गये हैं यह श्रुतस्कन्ध दो खण्डों में विभक्त है भाषा शैली की दृष्टि से यह ग्रंथ अति प्राचीन है। इसमें चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के जीवनचर्या का वर्णन सुन्दर ढंग से किया गया है।

(2) **सूत्रकृतांग** → इस ग्रंथ में स्वसमय और परसमय का विस्तृत वर्णन किया गया है इसके नाम के व्युत्पत्ति करते हुए कहा गया है कि स्वसमय अर्थात स्वागम और परसमय अर्थात परागम के भेद और स्वरूप को विश्लेषित करना सूत्र है और यह सूत्र जिसमें रहे वह सूत्रकृतांग है। इस ग्रंथ के दो श्रुतस्कन्ध हैं जिसमें क्रियावाद जैसे प्राचीन दार्शनिक सम्प्रदायों का स्वरूप एवं उसका निरसन किया गया है।

(3) **स्थानांगसूत्र** → इस श्रुतांग में 10 अध्ययन है। इस आगम में संख्या क्रम से बौद्धों के अंगुत्तर निकाय के समान जैनसिद्धान्तानुसार वस्तु संख्याओं का निरूपण है। जिसमें एक दर्शन एक चरित्र, एक समय एक प्रदेश एक प्रमाणु एक आत्मा आदि क्रम के भेदों का निरूपण किया गया है।

(4) **समवायांग** → इस श्रुतांग में 275 सूत्र है, इसमें भी संख्या विषयक वस्तुओं का निरूपण किया गया है। इसमें आत्मा, जीव और अजीव राशि, तीन गुप्ति, चार कषाय, पाँच महाव्रत, गणधर, भिक्षु आदि का वर्णन किया गया है यह ग्रंथ जैन सिद्धान्त की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है।

Scanned with CamScanner

⑤ व्याख्याप्रज्ञप्ति → इस ग्रंथ का दूसरा नाम भगवतीसूत्र भी है. इसमें जीव आदि पदार्थों की व्याख्या का निरूपण होने से इसे व्याख्या प्रज्ञप्ति कहते हैं। गौतम गणधर सिद्धान्त विषयक प्रश्न पूछते हैं और भगवान महावीर उसका व्याख्या करते हुए उत्तर देते हैं।

⑥ ज्ञातृधर्मकथा → इस ग्रंथ का दूसरा नाम नाथधर्म कथा भी है कारण इसमें नाथ नीति एवं आचार संबंधी नियमों को दृष्टान्तों और आख्यानों द्वारा समझाने वाली कथाओं का समावेश है। इसमें ज्ञातृ पुत्र भगवान महावीर द्वारा उपदिष्ट धर्म कथाओं का प्ररूपण है।

⑦ उवासगदशाओ → इस श्रुतांग में दस अध्ययन हैं. इसमें 10 उपासकों के कथानक हैं। इन कथानकों के माध्यम से जैन गृहस्थों के धार्मिक नियम समझाये गये हैं। इन कथानकों द्वारा अणुव्रत, गुणव्रत, शिक्षाव्रत एवं अन्य बारह व्रतों के अतिचारों का सुन्दर विवेचन है।

⑧ अंतगडदसाओ → इस श्रुतांग में उन स्त्री-पुरुषों के आख्यान हैं जिन्होंने अपने कर्मों का अंत करके मोक्ष प्राप्त किया है। इसमें आठ वर्गों में अनेक अध्ययन हैं जिसमें किसी न किसी व्यक्ति का नाम अवश्य आता है पर कथानक अपूर्ण है।

⑨ अनुत्तरोपपातिकदशा → इस श्रुतांग में उन महापुरुषों का चरित्र वर्णित है जिन्होंने अपनी धर्मसाधना के द्वारा मृत्यु प्राप्त कर अनुत्तर स्वर्ग के विमानों में जन्म ग्रहण किया। अनुत्तर विमानवासी देवों को एक बार मनुष्य जन्म प्राप्त कर निर्वाण हो जाता है। यह श्रुतांग तीन वर्गों में विभक्त है। इसमें घटनाएँ और आख्यान पल्लवित नहीं हैं।

⑩ प्रश्नव्याकरण → इस श्रुतांग में दो खण्ड हैं प्रथम में पाँच आश्रव द्वारों का और दूसरे में पाँच संवर द्वारों का वर्णन किया गया है. इसमें हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह रूप पापों का तथा अहिंसा आदि पाँच व्रतों का विश्लेषण किया गया है।

⑪ विपाकश्रुत → इस श्रुतांग में प्राणियों द्वारा किये गये अच्छे और बुरे कर्मों का फल दिखलाने के लिए बीस कथाओं को वर्णित किया गया है। इसमें दो श्रुतस्कन्ध हैं। दोनों में स्त्री-पुरुषों की जीवन गाथाएँ उल्लेखित हैं।

⑫ दृष्टिवाद → जैन समस्त दार्शनिकों के अनुसार यह श्रुतांग लुप्त हो गया है समवायांग के अनुसार इसके परिकर्म सूत्र, पूर्वगत, अनुयोग और चूलिका पाँच विभाग थे इन पाँचों के नाना भेद-प्रभेदों का उल्लेख पाया जाता है। विवरणों से ऐसा ज्ञात होता है कि परिकर्म के अन्तर्गत लिपिविज्ञान और गणित का विवरण भी सम्मिलित था।

Scanned with CamScanner